# कुछ प्रश्न ऐसे भी!

**राजेश कुमार त्यागी एवं डॉ. पी.के. यादव**
सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की।

**बहुत से प्रश्न ऐसे हैं, जो बतलाएं नहीं जाते,**
**बहुत से उत्तर ऐसे हैं, जो समझाएं नहीं जाते।**
**कि चादर से ज्यादा पांव फैलाए नहीं जाते,**
**कि घर पर आए हुए मेहमान लौटाए नहीं जाते।।**

मैं जीव विज्ञान का विद्यार्थी नहीं हूं परंतु संसार भर के विकास वादियों से आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी के कुछ प्रश्न हैं, जो इस प्रकार हैं–

**शारीरिक विकास**

1. विकासवादी अमीबा से लेकर विकसित होकर बंदर पुनः शनै–शनै मनुष्य की उत्पत्ति मानते हैं। वह बताएं कि अमीबा की उत्पत्ति कैसे हुई?
2. यदि किसी अन्य ग्रह से जीवन आया तो वहां उत्पत्ति कैसे हुई? जब वहां उत्पत्ति हो सकती है, तब इस पृथ्वी पर क्यों नहीं हो सकती?
3. यदि अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से किसी ग्रह पर हुई, तब मनुष्य के शुक्राणु और अंडाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती?
4. उड़ने की आवश्यकता होने पर प्राणियों के पंख आने की बात कही जाती है, परंतु मनुष्य जब से उत्पन्न हुआ, उड़ने हेतु हवाई जहाज बनाने का प्रयत्न करता रहा है, परंतु उसके पंख क्यों नहीं उगे? यदि ऐसा होता तो हवाई जहाज के आविष्कार की आवश्यकता नहीं होती।
5. उड़ने की आवश्यकता होने पर प्राणियों के पंख आने की बात कही जाती है, तब शीत प्रधान देशों में होने वाले मनुष्यों के रीछ जैसे बाल क्यों उगे? उसे कंबल आदि की आवश्यकता क्यों पड़ी?
6. जिराफ की गर्दन इसलिए लंबी हुई कि वह धरती पर घास सूख जाने पर ऊपर पेड़ों की पत्तियां गर्दन ऊँची करके खाता था। जरा बताएं कि कितने वर्ष तक नीचे सूखा और पेड़ों की पत्तियां हरी रही? फिर बकरी आज भी पेड़ों पर दो पैर रखकर पत्तियां खाती है, उसकी गर्दन लंबी क्यों नहीं हुई?
7. बंदर की पूछ गायब होकर मनुष्य बन गया। जरा कोई बताए कि बंदर की पूंछ कैसे गायब हुई? क्या उसने पूंछ का उपयोग करना बंद कर दिया? कोई बताए कि बंदरपूंछ का क्या उपयोग करता है और वह उपयोग उसने क्यों बंद कर दिया, यदि ऐसा ही है तो मनुष्य के भी नाक कान गायब होकर छिद्र ही रह सकते थे मनुष्य लाखों वर्षों से बाल और नाखून काटता आ रहा है तब भी बराबर वापिस उगते आ रहे हैं ऐसा क्यों?
8. सभी बंदरों का विकास होकर मानव क्यों नहीं बने? कुछ तो अमीबा के रूप में भी अब तक चले आ रहे हैं और हम मनुष्य बन गए, यह क्या है?
9. कहते हैं कि सांपों के पहले पैर होते थे, धीरे–धीरे वे घिस कर गायब हो गये। जरा विचारो, कि पैर कैसे गायब हुए, जब अन्य सभी पैर वाले प्राणियों के पैर बिल्कुल नहीं घिसे।
10. बिना अस्थि वाले जानवरों से अस्थि वाले जानवर कैसे बने? उन्हें अस्थियों की क्या आवश्यकता पड़ी?
11. बंदर और मनुष्य के बीच बनने वाले प्राणियों की श्रृंखला कहां गई?

12. विकास मनुष्य पर जाकर क्यों रूक गया? किसने इसे विराम दिया क्या उसे विकास की कोई आवश्यकता नहीं हैं?

**बौद्धिक व भाषा संबंधी विकार**

1. कहते हैं कि मानव ने धीरे–धीरे बुद्धि का विकास कर लिया, तब प्रश्न है कि बंदर व अन्य प्राणियों में बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?
2. मानव के जन्म के समय इस धरती पर केवल पशु–पक्षी ही थे, तब उसने उनका ही व्यवहार क्यों नहीं सीखा? मानवीय व्यवहार का विकास कैसे हुआ? करोड़ों वनवासियों में अब तक विशेष बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?
3. गाय, भैंस, घोड़ा, भेड़, बकरी, ऊँट, हाथी आदि जानवर करोड़ों वर्षों से मनुष्य के पालतू पशु रहे हैं पुनरपि उन्होंने ना मानवीय भाषा सीखी और ना मानवीय व्यवहार, तब मनुष्य में ही यह विकास कहां से हुआ?
4. दीपक से जलता पतंगा करोड़ों वर्षों में इतना भी बौद्धिक विकास नहीं कर सका कि स्वयं को जलने से रोक ले और मानव बंदर से इतना बुद्धिमान बन गया कि मंगल की यात्रा करने को तैयार है क्या इतना जानने की बुद्धि भी विकास वादियों में विकसित नहीं हुई? पहले सपेरा सांप को बीन बजाकर पकड़ लेता था और आज भी वैसा ही करता है परंतु साप में इतने ज्ञान का विकास भी नहीं हुआ कि वह सपेरे की पकड़ में नहीं आए।
5. पहले मनुष्य बल, स्मरण शक्ति एवं शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता की दृष्टि से वर्तमान की अपेक्षा बहुत अधिक समृद्ध था, आज यह हरास क्यों हुआ जबकि विकास होना चाहिए था?
6. संस्कृत भाषा, जो सर्वाधिक प्राचीन भाषा है उसका व्याकरण वर्तमान विश्व की सभी भाषाओं की अपेक्षा अधिक समृद्ध व व्यवस्थित है, तब भाषा की दृष्टि से विकास के स्थान पर ह्रास क्यों हुआ?
7. प्राचीन ऋषियों के ग्रंथों में भरे विज्ञान के सम्मुख वर्तमान विज्ञान अनेक दृष्टि से पीछे है, यह मैं अभी सिद्ध करने वाला हूं तब यह विज्ञान का ह्रास कैसे हुआ? पहले केवल अंतः प्रज्ञा से सृष्टि का ज्ञान ऋषि कर लेते थे, तब आज वह ज्ञान अनेकों संसाधनों के द्वारा भी नहीं होता यह उल्टा काम कैसे हुआ?

भला विचारे, कि यदि पशु पक्षियों में बौद्धिक विकास हो जाता तो एक भी पशु पक्षी मनुष्य के वश में नहीं आता। यह कैसी अज्ञानता भरी सोच है, जो यह मानती है कि पशु पक्षियों में बौद्धिक विकास नहीं होता परंतु शारीरिक विकास होकर उन्हें मनुष्य में बदल देता और मनुष्य में शारीरिक विकास नहीं होकर केवल भाषा व बौद्धिक विकास ही होता है।

यदि प्रयोग, परीक्षण व गणित के साथ सतर्क, उभा का साथ ना हो तो वैज्ञानिकों का श्रम व्यर्थ हो सकता है।

यदि विज्ञान सर्वत्र गणित व प्रयोगों को आधार मानता है तब क्या कोई विकासवाद पर गणित व प्रयोगों का आश्रय लेकर दिखाएगा?

इस कारण मेरा सम्माननीय तथा सुयोग्य वैज्ञानिकों एवम् देश व संसार के प्रबुद्ध जनों से अनुरोध है कि प्रत्येक प्राचीन ज्ञान का अंधविरोध तथा वर्तमान पद्धति का अंधाअनुकरण कर बौद्धिकता दासत्व का परिचय ना दें।

तार्किक दृष्टि का सहारा लेकर ही सत्य को ग्रहण व असत्य का परित्याग करने का प्रयास करें।